22. (क) ''कर्णस्य दानवीरता'' पाठ के आधार पर कर्ण की दानवीरता पर प्रकाश डालें। 3

(ख) ''सांख्यदर्शनस्य प्रवर्त्तकः कपिलः। योगदर्शनस्य पतञ्जलिः। एवं गौतमेन न्यायदर्शनं रचितम्।'' 3 x1= 3

(i) यह उक्ति किस पाठ से है?

(ii) सांख्यदर्शन के प्रवर्त्तक कौन है?

(iii) न्यायदर्शन के रचनाकार कौन थे?

23. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में एक पद में दें 4 x1= 4

(i) वृद्ध व्याघ्रः कुत्र ब्रूते?

(ii) मैथिलकोकिलः कः आसीत्?

(iii) सिन्दूरदानं कस्मिन् संस्कारे विधीयते?

(iv) कर्णः कस्यदेशस्य राजा आसीत्?

उत्तराणि मॉडल सेट-09

संस्कृत

1. क. (i) दशरथस्य (ii) पुत्रकामेष्टियज्ञं (iii) वशिष्ठः (iv) महाप्रतापी।

ख. (i) दशरथस्य कनिष्ठा राजपत्नी सुमित्रा आसीत्।

(ii) ऋष्यश्रृंगः दशरथस्य जामाता आसीत्।

ग. (i) महर्षेः+अनुमत्या (ii) लङ्लकारः (iii) महाप्रतापी (iv) क्तवतु

घ. राजा दशरथः

2. (i) प्रधानाचार्यः (ii) विगत वर्षे (iii) अधुना (iv) गन्तुं (v) अहं

(vi) प्रमाणं पत्रं (vii) भवान् (viii) भविष्यामि।

3. **(i) अस्माकं राष्ट्रपिता (महात्मा गांधीः)**

https://www.evidyarthi.in/

अस्माकं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीः महाभागः आसीत्। अस्य जन्म गुर्जर प्रान्तस्य पोरबन्दर नामके स्थाने अभवत्। अस्य पूर्णनाम- मोहन-दास करमचन्द गाँधी आसीत्। गांधीमहोदयःशान्तेः अग्रदूतः अहिंसायाः अवतारः चासीत्। सः महामानवः आसीत्। अस्यं जन्मोत्सवः प्रतिवर्षम् अक्टूबर मासस्य द्वितीयायां तिथौ सम्पद्यते। अस्य प्रभावतः भारतः स्वतन्त्रोजातः। सर्वेः भारतीयैः प्रेरक पुरूष-रूपेण सततं स्मर्यते।

(ii) प्रातः भ्रमणम्

प्रातः काले उत्थाय जनाः भमणस्य आनन्दं लभन्ते।

मनोहारिणी वेला प्रातः नित्यं स्वयेमव आगच्छति।

प्रातः काले मनः एकाग्रं भवति।

शुद्धवायुः सर्वत्र वहति।

रात्रेः निःशब्दता समाव्यते।

पक्षिणाः कलखः सर्वत्र श्रूयते।

प्रातः भ्रमणं नित्यं स्वास्थ्यवर्धकः भवति।

(iii) भ्रष्टाचारः

भ्रष्ट आचरणम् एव भ्रष्टाचारः कथ्यते। कलियगं भ्रष्टाचारस्य युगमस्ति। इदानीम् अस्माकं देशे सर्वत्र भ्रष्टाचारस्यैव आधिपत्यम्। प्रायः केचन् नेतारः भ्रष्टम् आचरन्ति। सर्वासु समस्यासु सम्प्रति भ्रष्टाचार एव प्रधानम्। अधुना भ्रष्टाचारे पङ्के बहुधा जनाः समाहिताः सन्ति। अतएव राष्ट्रोत्थानाय भ्रष्टाचारस्य उन्मूलनम् अस्माकं परमं लक्ष्यम्।

(iv) गुरूभक्तिः

गुरूः ज्ञानस्य दिव्यं प्रकाशं शिष्याय वितरति।

गुरोः उपदेशामृतं पीत्वा शिष्यः सन्मार्गो प्रवर्तते।

https://www.evidyarthi.in/

सद्गुरूः शिष्ये सदाचारं संयमं चरित्र बलञ्च सञ्चारयति।

अधुना गुरूशिष्योर्मध्ये प्राचीनः आदर्श सम्बन्धः नास्ति।

निष्ठापूर्वक गुरोः आज्ञापालनम् एव आदर्श गुरूभक्तिः कथ्यते।

आरूणिः आदर्श गुरूभक्तः आसीत।

मानवस्य समग्र विकासाय विद्यालयेषु गुरुः शिक्षां ददाति।

4. (क) संस्कारः एवं अन्य (ख) (iii) प्रतिकारः

5. (क) सप्तमी (ख) (iii) तृतीया

(ग) धेनु (घ) तृतीया

6. (क) बान्धवः (ख) क्त्वा (ग) क्तिन् प्रत्यय।

7. (क) टाप् स्त्री प्रत्यय (ख) सेविका

8. (क) (ii) अस् (मूलधातु) (ख) (i) लङ् लकार।

9. (क) नगरस्य समीपम् (ख) द्वन्द्व समास,

(ग) राष्ट्रस्य पतिः = राष्ट्रपतिः

(घ) अव्ययीभाव समास।

10. (क) सप्तमी विभक्ति। सूत्र- ''यस्य च भावेन भाव लक्ष्णम्''।

(ख) इत्थम्भूत लक्षणे- जिस लक्षण से 'वस्तु इस प्रकार है' ऐसा ज्ञात हो उस लक्षण बोधक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है।

यथा- जटाभिः तापसः ।

11. (क) इत्यपि (ख) भो+अनम् = भवनम्।

(ग) य् (घ) मनः+रथः = मनोरथः एवं अन्य ।

12. (क) हिमालयः पर्वतानां राजा अस्ति।

(ख) दरिद्रेभ्यः धनं देहि।

https://www.evidyarthi.in/

(ग) किं त्वं विद्यालयं चलिष्यसि?

(घ) 'रघुवंशम्' कालिदासस्य रचना अस्ति।

(ङ) मोहनः अधना कुत्र वसति?

(च) सीता रामस्य भार्या आसीत्।

(छ) गङ्गा हिमालयात् निःसरति।

(ज) गृहम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।

(झ) तस्याः नाम 'राधा' अस्ति।

(ञ) पाटलिपुत्रे गोलगृहम् अस्ति।

खण्ड-घ (पठित अवबोधनम्)

13. (क) हे कुन्ती पुत्र! दरिद्रों का पालन करो। जो सम्पन्न हैं उन्हें धन मत दो। रोगी के लिए दवा लाभदायक होता है, जो निरोगी है उसे दवा देने से क्या लाभ?

(ख) ऐश्वर्य चाहने वाला पुरूष- निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध आलस्य और दीर्घ सूत्रता इन छः दोषों को छोड़ दें।

14. प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'पीयूषम् भाग-2' के 'नीति-श्लोकाः पाठ से संकलित है। तथा इसके रचनाकार 'विदुर' हैं। इस श्लोक के माध्यम से नीतिकार विदुर कहते हैं कि- हे राजन! सदैव प्रिय बोलने वाले पुरूष सुलभ हैं, लेकिन अप्रिय एवं उचित बोलने वाले एवं सुनने वाले दोनों दुर्लभ हैं।

15. पथिक, महा कीचड़ में फंस गया एवं भागने में असमर्थ हो गया।

16. (क) कर्णः प्रथमं गोसहस्रं दातुम् इच्छति।

(ख) 'सत्यार्थ प्रकाशः' दयानन्दस्य रचना अस्ति।

17. (क) अहिंसा (ख) ज्ञानम्

18. (क) बाघ बोला- हे पथिक सुनो। पहले ही जवानी में मैं अति दुराचारी था।

https://www.evidyarthi.in/

(ख) प्राचीन काल में शिष्य को ही ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरू के घर पर ही शिष्य वेद पढ़ना आरम्भ करते थे।

19. (क) आत्मा महतो महियान् ।

(ख) विद्यापतिः मैथिली कवि आसीत्।

(ग) कर्णः कुन्त्याः पुत्रः आसीत्।

(घ) पुरा शिष्यः वेदारम्भं गुरुगृहे करोति स्म।

20. व्याघ्रपथिक कथा में सोने के कंगन के लोभ के कारण पथिक मारा गया। इस कथा से यही शिक्षा मिलती है कि हमें लोभ नहीं करना चाहिए। लोभ हमें विनाश की ओर ले जाता है।

21. (क) हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्य मुखम् अपिहितम्।

(ख) पथिकः महापङ्के निमग्नः आसीत्।

(ग) पाटलिपुत्रं गङ्गायाः नद्याः तीरे अवस्थितमस्ति।

(घ) विजयाङ्कायाः वर्णः श्यामः आसीत्।

22. स्वामी दयानन्द के माता-पिता भगवान शिव के उपासक थे। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के दिन शिव-पार्वती की पूजा इनके परिवार में विशेष रूप से की जाती थी। एक बार महाशिवरात्रि के दिन इन्होंने देखा कि एक चूहा भगवान शंकर की मूर्ति के उपर चढ़कर उनपर चढ़ाये हुये प्रसाद को खा रहा है। इससे उन्हें आत्म विश्वास हो गया कि मूर्ति में भगवान नहीं होते। फलस्वरूप वे मूर्ति पूजा के विरोधी हो गये।

23. (क) वेदाङ्ग छः हैं। इनके नाम अधोलिखित है-

(i) शिक्षा (ii) कल्प (iii) निरूक्त (iv) छन्द

(v) व्याकरण (vi) ज्योतिष ।

https://www.evidyarthi.in/

(ख) 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ संस्कृत के प्रथम नाटककार 'भास' द्वारा रचित 'कर्णभार' नामक एकांकी रूपक से संकलित किया गया है। इसमें महाभारत के प्रसिद्ध पात्र कर्ण की दानवीरता दिखायी गई है। इन्द्र कर्ण से छलपूर्वक उसके रक्षक कवच कुण्डल को माँग लेते हैं और कर्ण उन्हें दे भी देता है। कर्ण बिहार के अङ्गराज्य (वर्त्तमान में मुंगेर) का शासक था। इस पाठ से संदेश मिलता है कि दान करते हुए माँगने वाले की पृष्ठभूमि जान लेनी चाहिये। अन्यथा परोपकार विनाशक भी हो जाता है।

https://www.evidyarthi.in/